RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-09
September-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि पर व्यक्तित्व का प्रभावः अध्ययन

[1]शिखा शर्मा, [2]प्रो. अजय कुमार शर्मा

[1]शोद्यार्थिनी (शिक्षाविभाग) मेवाड़ विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ
[2]प्रोफेसर शिक्षाविभाग मेवाड़ विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ़

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Aug 2019

Keywords
माध्यमिक स्तर, शैक्षिक सन्तुष्टि, व्यक्तित्व

***Corresponding Author**
Email: vishalshikha69[at]gmail.com

ABSTRACT

इस शोध पत्र में छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया गया है जिसमें 400 छात्रों को उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से लिया गया है। इस अध्ययन को पूर्ण करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग तथा आंकड़ो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के संकलन हेतु छात्र शैक्षिक सन्तोष मापनी– डॉ. अलका गुप्ता एवं व्यक्तित्व मापनी – आई. एस. माथुर, प्रभा भाटिया एवं गीता कपूर द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस शोध के परिणाम बताते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के बहिर्मुखी छात्रों का शैक्षिक सन्तुष्टि स्तर अन्तर्मुखी छात्रों के शैक्षिक सन्तुष्टि स्तर से धनात्मक है

प्रस्तावना

एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी समाज व देश उन्नति के पथ पर तब तक अग्रसर नहीं हो सकता। जब तक उसके अन्दर प्रत्येक मानव को स्वतन्त्रता पूर्वक अपना विकास करने की क्षमता न आ जाये। प्रत्येक व्यक्तित्व में अन्तनिहित शक्तियां होती है उन्हीं क्षमताओं के अनुसार व्यक्ति का विकास होता है। मानव के विकास में शिक्षण एवं शैक्षिक प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शिक्षा प्रक्रिया व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। आज के विद्यार्थी भविष्य के कर्णधार है वह देश के भविष्य की आशा है। देश का यह महत्वपूर्ण अंग अभिभावकों, शिक्षकों एवं समाज के लिए ज्वलन्त समस्या बना हुआ है। वर्तमान में छात्र के लिए वातावरण निर्माण की समस्या जस की तस बनी हुई है। छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि तथा विद्यालय वातावरण से सन्तुष्टि–असन्तुष्टि सम्पूर्ण देश के विकास के लिए बहुत महत्व रखती है। छात्र ही अगर असन्तुष्ट होता है तो यह उसकी उपलब्धि पर सीधा प्रभाव डालता है। मॉसलो के अनुसार मनुष्य की कुछ आवश्यकता होती है। जिनकी पूर्ति–आपूर्ति से मनुष्य की सन्तुष्टि–असन्तुष्टि होती है। जॉन डी.वी. ने भी कहा है कि विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट पर्यावरण है जहाँ जीवन के निश्चित गुणो, विशेष प्रकार की क्रियाओं एवं व्यवस्थाओं की शिक्षा निश्चित उद्देश्यों निश्चित पाठ्यचर्या, निश्चित शिक्षण विधियों आदि के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण की शैक्षिक सन्तुष्टि पर निर्भर करती है।

मुख्य बिन्दुओं का परिभाषिकरण

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र – जो छात्र कक्षा 11 से 12 में अध्ययन करते हैं उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र कहलाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में देहरादून जनपद के 11 वी कक्षा की छात्रों को माध्यमिक स्तर के छात्र दर्शया गया है।

व्यक्तित्व – विविध प्रसगों में व्यक्ति जिस प्रकार स्वयं को प्रस्तुत करता है, अपने व्वहार व आचरण का जो प्रतिमान दूसरों के समक्ष रखता है तथा जिस विशिष्ट शैली से अन्तक्रिया करता है। उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है जो उसके शरीर, बुद्धि, स्वभाव, संवेग आदि का एक समन्वित व्यवस्था है। जुंग 1921 ने व्यक्तित्व के दो प्रकार बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी बताये। प्रस्तुत अध्ययन में इन्ही दो प्रकार के व्यक्तित्व को परिभाषित किया गया।

शैक्षिक सुन्तुष्टि – शैक्षिक सन्तुष्टि से तात्पर्य छात्रों द्वारा विद्यालय में घटित क्रियाकलापों से प्राप्त अनुभव के प्रति उनके कुल दृष्टिकोणों से है। दूसरे शब्दों में विद्यालयों से सम्बन्धित समस्त क्रियाकलापों के प्रति छात्रों का कुल दृष्टिकोण ही छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि है। इसमें पाठ्यक्रम, पुस्तकालय, भौतिक सुविधाए, पाठ्य सहगामी क्रियाए, परीक्षा प्रणाली, शिक्षक एवं शिक्षण युक्तियां आदि शामिल है।

अध्ययन का महत्व

शिक्षा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक विकास के लिए आधार प्रदान करती है। यह व्यक्ति का सुयोग्य व्यक्तित्व का आधार देती है। वर्तमान समय में छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है अगर छात्रों को शैक्षिक सन्तुष्टि प्राप्त नहीं होती तो शिक्षा अपने उद्देश्यों से दूर है। इसलिए छात्रों में शैक्षिक असन्तुष्टि के कारणों को जानने के लिए आवश्यक है कि छात्रों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाए क्योंकि छात्रों का व्यक्तित्व छात्र की शैक्षिक सन्तुष्टि पर सीधा प्रभाव डालता है। शैक्षिक असन्तुष्टि, सन्तुष्टि के कारणों को जानना तथा उन बाधाओं को दूर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

करना जिससे छात्र विद्यालय वातावरण में आसानी से समायोजन कर शिक्षा एवं व्यक्तिगत उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके भारत में शैक्षिक सन्तुष्टि एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित कारकों पर शोध का पर्याप्त अभाव है प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि को प्रभावित करने में छात्रों के व्यक्तित्व का सम्बन्ध है या नहीं। जिससे छात्रों के व्यक्तित्व को उसी अनुरुप विकसित किया जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का पुनर्निरीक्षण

आंडेल ए0के0 (1957) ने विद्यालय से छात्र सन्तुष्टि, उपलब्धि एवं व्यक्तित्व सम्बन्धित कारकों के मध्य सम्बन्ध पाया। उन्होंने पाया कि विद्यालय से छात्र सन्तुष्टि – असन्तुष्टि तथा व्यक्तित्व कारकों के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

सोराया, हाकिनी एवं अन्य (2016) ने अपने शोध कार्य में छात्राओं पर शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तित्व में संबन्ध जानने हेतु किया तथा अध्ययन में पाया शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

त्रिपाठी (2014) ने शोध कार्य ग्रामीण तथा शहरी परिवेश के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा व व्यक्तित्व के सन्दर्भ किया तथा पाया कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यर्थियों के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अन्तर है।

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व के आधार पर शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना

अध्ययन की परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

1. शोध कार्य केवल देहरादून जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य केवल उच्च माध्यमिक स्तर के 11 वी कक्षा के 400 छात्रों पर ही सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण आधारित अध्ययन है।

अध्ययन प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के चयन के लिए यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग कर 400 छात्रों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों से चुना गया है।

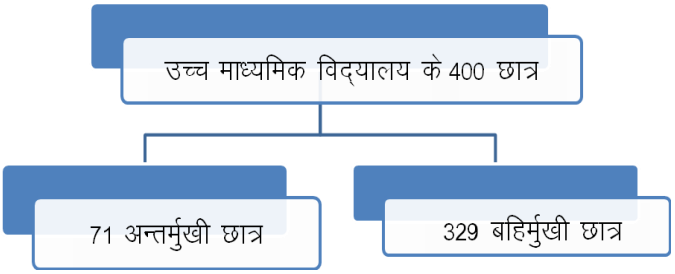

अध्ययन मापन उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समंको के सकंलन हेतु निम्न मापन उपकरणों का प्रयोग किया

1. छात्र शैक्षिक संतोष मापनी– डॉ. अलका गुप्ता द्वारा निर्मित जिसमें कुल 72 कथन है। जो छात्र सन्तुष्टि से सम्बन्धित 08 विमाओं में विभक्त है।
2. व्यक्तित्व मापनी – आई.एस. माथुर, प्रभा भाटिया एवं गीता कपूर द्वारा निर्मित जिसमें 50 पद हैं प्रथम 25 पद न्यूरोटिक व्यक्तित्व तथा अन्तिम 25 पद बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व से सम्बन्धित है।

अध्ययन सांख्यिकीय प्रविधियां

अध्ययन विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी. परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिकल्पना का मूल्यांकन करने के लिए शैक्षिक सन्तुष्टि के लिए प्रयुक्त छात्र शैक्षिक सन्तोष मापनी में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों द्वारा प्राप्त संमक पर ही टी. परीक्षण प्रयुक्त किया गया। जिसको तालिका 01 में दर्शाया गया है।

तालिका 01

उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि में अन्तर की सार्थकता का प्रदर्शन

चर	उच्च माध्यमिक विद्यालय के अन्तर्मुखी छात्र			उच्च माध्यमिक विद्यालय के बहिर्मुखी छात्र			टी. अनुपात
शैक्षिक सन्तुष्टि	छात्र संख्या	माध्य	मानक विचलन	छात्र संख्या	माध्य	मानक विचलन	2.61
	71	250.38	36.32	329	263.02	40.13	

उपरोक्त तालिका अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी छात्रों का मध्यमान 250.38 तथा बहिर्मुखी छात्रों का मध्यमान 263.02 है। बहिर्मुखी छात्रों के आंकड़ो का मध्यमान अन्तर्मुखी छात्रों के मध्यमान से अधिक है। जिससे पता चलता है कि बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि अन्तर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि से सार्थक रुप से अधिक है। उपरोक्त मध्यमान अन्तर की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सार्थकता को जानने के लिए प्राप्त किया गया टी. मूल्य 2.61 है। स्वातंत्रय मात्रा 398 पर टी. मूल्य 2.61 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्राप्त विश्लेषण के आधार पर शून्य उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

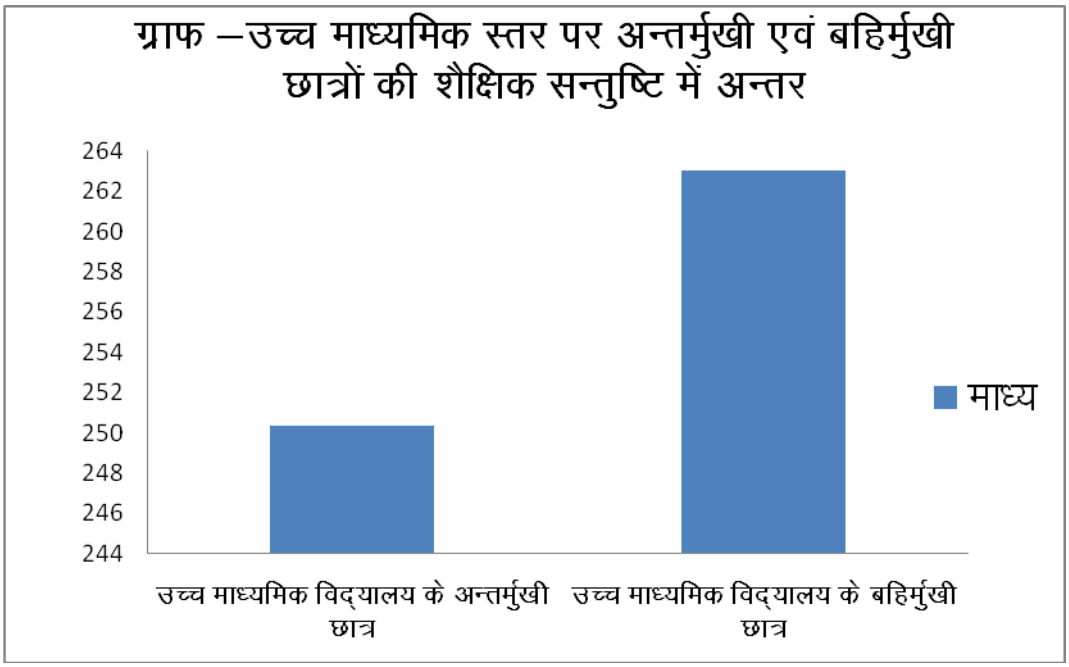

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित समको के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया (तढ0ण्01) जिससे सिद्ध होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है। और बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि अन्तर्मुखी छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि से सार्थक रुप से अधिक है। डायमण्ड एस. सी. (1982) ने छात्रों की कक्षा सन्तुष्टि मापन अध्ययन में अन्तर्मुखी छात्रों से अधिक सन्तुष्टि बहिर्मुखी छात्रों की पायी तथा बहिर्मुखी छात्रों एवं शैक्षिक सन्तुष्टि में सकारात्मक धनात्मक सम्बंध पाया।

शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध अध्ययन उन शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है जो शैक्षिक सन्तुष्टि तथा व्यक्तित्व कारकों से सम्बन्धित शोध कार्य कर रहें हैं। यह शोध निष्कर्ष स्कूल प्रशासन, अध्यापक आदि को शैक्षिक परिस्थितियों को बहिर्मुखी बनाने में चिन्तन, सिद्धान्त या अन्य प्रत्ययों के विकास हेतु प्ररेणा देना में सहायक सिद्व होगा।

सन्दर्भ

1. कपिल, एच.के. (2004). अनुसंधान विधियां.एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा पेज 20–23
2. सिंह, अरुण कुमार. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, बिहार पेज 70,85–90
3. अस्थाना, विपिन, (2002), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पेज 50,53
4. Sharma, M. 1985. Adolescent's satisfaction with educational institutions, New Delhi: M.N. Publication and Distributors. 34, 56
5. Bala R. (2007). Education Research, Alfa Publications, New Delhi P: 56-58
6. Khan M.S. & Akbar S.R. (2008). School Teaching,A.H.P. Publishing Corporation, New Delhi P: 1-2, 5
7. Surender S. Dahiya (2008). Educational Technology Towards Better Teacher Performance, Shipra Publications, Delhi P: 212
8. Feather, N.T.1972. Values Similarity and Adjustment Australian Journal of Psychology PP 193,196
9. Hechinger, F.J. 1972. The Undecided Students- is he satisfied with college, journal of college students personnel, PP 247.249
10. Gregg, W.E. 1973 Several Factors affecting Graduates students satisfaction, journal of higher Education, PP 19-22

RRIJM 2015, All Rights Reserved